डा. गिरजा उरांव
एसोसिएट प्रो.
R.M.C. सासाराम

समाज मनोविज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध (Relation of Soc. Psy. with other Social Sc.)

समाज मनोविज्ञान के विकास में मनोविज्ञान की सभी शाखाओं का महत्व किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में अवश्य रहा है। संभवतः यही कारण है कि अपनी बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था में बहुत कम समय में पहुँच गया। कहा भी जाता है " All Psy is Social Psy. कई विद्वानों ने इसके विकास में सहायता प्रदान की है और इसका संम्बन्ध इन विद्वानों के साथ घनिष्ठ है।

समाज मनोविज्ञान एवं सामान्य मनोविज्ञान (Social Psy & General Psy)

समाज मनोविज्ञान एवं सामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के दो अलग-2 क्षेत्र है। सामान्य मनोविज्ञान व्यक्ति का अध्ययन अकेली परिस्थिति में प्रस्तुत करता है। व्यक्ति को अकेली परिस्थिति में रखकर उसके बुद्धि, व्यक्तित्व, संवेदन, प्रत्यक्षण अभिप्रेरक आदि विशद अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है जबकि समाज मनोविज्ञान में व्यक्ति के अनुभव और व्यवहार का अध्ययन सामूहिक परिस्थिति में किया जाता है। समाज मनोविज्ञान में सामाजिक

या समुहिक वातावरण पर सर्वाधिक जोर दिया जाता है जबकि सामान्य मनोविज्ञान में इस पर कम जोर दिया जाता है। जिस तत्परता तथा योजनाबद्ध ढंग से समाज मनोविज्ञान समाज एवं संस्कृति के प्रभावों का अध्ययन करता है इस तत्परता से सामान्य मनोविज्ञान का अध्ययन इनका नहीं करता। इन असमानताओं के बावजूद समाज मनोवि. एवं सामान्य मनोविज्ञान में निकट का अपनी सम्बन्ध है। बल्कि यह कहा जाये कि दोनों एक दूसरे से सम्बन्धित है तो कोई अतिशयोक्ति न होगा।

चुकि सामान्य मनोविज्ञान मे व्यक्ति का अध्ययन उसके सभी अनुभव एवं व्यवहार का अध्ययन अकेली परिस्थिति मे किया जाता है और समाज मनोविज्ञान मे व्यक्ति का अध्ययन समुहिक परिस्थिति मे किया जाता है अतः दोनों को एक दूसरे को समझने मे सुविधा प्राप्त होती है क्योंकि दोनो एक ही घटना का अध्ययन दो अलग-2 परिस्थिति में प्रस्तुत करते हैं। अगर किसी व्यक्ति का व्यवहार और अनुभव अकेली परिस्थिति में जैसा होता है वैसा सामुहिक परिस्थिति मे नहीं होता है या इसमें किसी तरह का बदलाव या परिवर्तन

देखने को मिलता है तो इस बदलाव या परिवर्तन का कारण सामूहिक परिस्थिति स्वीकार किया जाता है। साथ ही यह समझने में सहायता मिलती है सामूहिक परिस्थिति व्यक्ति के क्रियाओं को प्रभावित करती है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। कृष्ण और राम दो व्यक्ति हैं। कृष्ण राम से बलवान हैं दोनों में झगड़ा होता है। एक दिन कृष्ण से राम की मुलाकात अकेले में होती है। राम डर जाता है और उसकी अधीनता स्वीकार कर लेता है पर दूसरे दिन कृष्ण से राम की मुलाकात अपने साथियों के साथ होती है। इस बार राम डरता नहीं है बल्कि कृष्ण को मारने के लिए हाथ पैर फैलाता है और कृष्ण डरकर उसकी अधीनता स्वीकार कर लेता है। दोनों के व्यवहारों में परिवर्तन का एक बड़ा कारण समूह का प्रभाव है इस प्रकार सामान्य मनोविज्ञान एवं समाज मनोविज्ञान दोनों को इस तथ्य को समझने में सहायता मिलती है कि अकेली परिस्थिति तथा सामूहिक परिस्थिति में एक ही व्यक्ति का व्य भिन्न-2 होता है।

परन्तु यह ठीक-2 नहीं कहा जा सकता है कि कहाँ सामान्य मनोविज्ञान और कहाँ समाज मनोविज्ञान अलग होता है अकेली परिस्थिति और सामूहिक परिस्थिति के बीच सीमा

रेखा (Demarkation line) नहीं खींची जा सकती है। जब हम व्यक्ति को अकेली परिस्थिति में अध्ययन करते है तब भी वह अपने विगत विश्वास और मनोवृत्ति से प्रभावित होता रहता है वह यह भी सोच सकता है कि उसकी क्रियाओं को दूसरे लोगों से मिलाया जायेगा और अगर खराब निकला तो उसकी भारी बदनामी होगी अतः यह विचार अकेली परिस्थिति मे भी उसके व्यवहार मे परिवर्तन ला देता है। ठीक उसी प्रकार कोई व्यक्ति मिलता-जुलता रंग का पैंट शर्ट पहनता है या कोई युवती चुस्त ब्लाउज या मैच करता हुआ साडी ब्लाउज पहनती है तो वह न केवल अपनी रूची से बल्कि दूसरों के रूचि और विचार से भी प्रभावित होती है इस प्रकार यद्यपि कोई व्यक्ति अकेला रहता है पर दूसरों के मनोवैज्ञानिक उपस्थिति से प्रभावित होता रहता है इन बातों से स्पष्ट होता है कि किस प्रकार अकेली परिस्थिति मे भी लोगों की मनोवैज्ञानिक उपस्थिति का महत्व है ठीक इसी तरह दूसरी ओर समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र मे भी सामान्य मनोविज्ञान या अकेली परिस्थिति का विशेष महत्व है। M. Sherif के शब्दों में " समाज मनोविज्ञान में विभिन्न प्रकार के सिद्धान्तों को अपना कर ही सामाजिक उपाधि

Scanned with CamScanner

प्राप्त नहीं की है बल्कि उसने वास्तव में सामान्य मनोविज्ञान के वैज्ञानिक सिद्धान्तों का उपयोग सामाजिक क्षेत्रों में किया है।" इस प्रकार दोनों समाज मनोविज्ञान एवं सामान्य मनोविज्ञान के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है।

Scanned with CamScanner